स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग

द्वितीय सेमेस्टर — दिनांक-20/07/...

10 THURSDAY JULY

1

JUN 14

एक समय सब सहित समाजा । राजसभाँ रघुराजु बिराजा ॥
सकल सुकृत मूरति नरनाहू । राम सुजसु सुनि अतिहि उछाहू ॥
नृप सब रहहिं कृपा अभिलाषें । लोकप करहिं प्रीति रुख राखें ॥
त्रिभुवन तीन काल जग माहीं । भूरि भाग दसरथ सम नाहीं ॥
मंगल मूल रामु सुत जासू । जो कछु कहिअ थोर सबु तासू ॥
रायँ सुभायँ मुकुर कर लीन्हा । बदन बिलोकि मुकुट सम कीन्हा ॥
श्रवण समीप भए सित केसा । मनहु जरठपनु अस उपदेसा ॥
नृप युवराज राम कहुँ देहू । जीवन जनम लाहु किन लेहू ॥
दोहा – यह बिचारु उर आनि नृप, सुदिन सुअवसरु पाइ ।
प्रेम पुलकि तन मुदित मन, गुरहि सुनायउ जाइ ॥1॥

कहइ भुआलु सुनिअ मुनिनायक । भए राम सब बिधि सब लायक ॥
सेवक सचिव सकल पुरबासी । जो हमारे अरि मित्र उदासी ॥
सबहि रामु प्रिय जेहि बिधि मोही । प्रभु असीस जनु तनु धरि सोही ॥
बिप्र सहित परिवार गोसाईं । करहिं छोहु सब रौरिहि नाईं ॥
जे गुरु चरण रेणु सिर धरहीं । ते जनु सकल बिभव बस करहीं ॥
मोहि सम यहु अनुभयउ न दूजें । सबु पायउँ रज पावनि पूजें ॥
अब अभिलाषु एकु मन मोरें । पूजहि नाथ अनुग्रह तोरें ॥
मुनि प्रसन्न लखि सहज सनेहू । कहेउ नरेस रजायसु देहू ॥
दोहा – राजन राउर नामु जसु, सब अभिमत दातार ।
फल अनुगामी महिप मनि, मन अभिलाषु तुम्हार ॥2॥

विद्यार्थियों आज हम लोग जिस अंश की चर्चा करने जा रहे हैं वह इसलिए महत्वपूर्ण नहीं है कि उसमें साहित्यिक गरिमा कितनी समाहित है, यह इसलिए अपना महत्व रखता है कि इसका महत्व कथासूत्र को दशा-दिशा देने में अपना महत्व रखता है।

गोस्वामी तुलसीदास

14 AUG 11

12 SATURDAY

13 SUNDAY

...मुनि वशिष्ठ जी को युवराज पद से ... करने के लिए शुभ मुहूर्त देखिए और राजाओं में गादी की आज्ञा दीजिए।

सब बिधि गुरु प्रसन्न जिये जानी। बोलेउ राउ रहँसि मृदु बानी॥

नाथ रामु करिअहिं जुबराजू। कहिअ कृपा करि करिअ समाजू॥
मोहि अछत यहु होइ उछाहू। लहहिं लोग सब लोचन लाहू॥
प्रभु प्रसाद सिव सबइ निबाहीं। यह लालसा एक मन माहीं॥
पुनि न सोच तनु रहउ कि जाऊ। जेहिं न होइ पाछें पछिताऊ॥
सुनि मुनि दसरथ बचन सुहाए। मंगल मोद मूल मन भाए॥
सुनु नृप जासु बिमुख पछिताहीं। जासु भजन बिनु जरनि न जाहीं॥
भयउ तुम्हार तनय सोइ स्वामी। रामु पुनीत प्रेम अनुगामी॥
बेगि बिलंबु न करिअ नृप, साजिअ सबुइ समाजु।
सुदिन सुमंगलु तबहिं जब, रामु होहिं जुबराजु॥4॥

वशिष्ठ जी यहाँ गुरु की प्रसन्नता को जानकर राजा दशरथ जी पुनः पुनः यह कहते हैं कि युवराज हेतु राम को तैयार करें सकल समाज। सुनि हे दशरथ जी कहते हैं कि रहते, मेरे जीवनकाल में यह कार्यक्रम हो जाय तो अच्छा है। यह वह कार्य है जिसे देखने की लालसा सबके मन में है हे गुरुदेव शिव कृपा से सब कुछ सकुशल आज तक होता रहा है, अब तक यही एक इच्छा शेष है जीवन मरण अपने हाथ में नहीं है पता नहीं कब ...

में दुनाना भूल जाए। इसलिए मैं यह इच्छा व्यक्त करना चाहता हूँ यह कार लेने के बाद मरणोपरान्त प्रसन्नता नहीं रहेगा। यह बातें सुन वशिष्ठ मुनि बहुत प्रसन्न हुए और बोले कि आपके पुत्र हैं जिनके नाम और स्मरण से जी का जनम सार्थक हो जाता है। वे प्रेम वश में होकर ही आपके पुत्र बने हैं।

वशिष्ठ मुनि राजा से कहते हैं कि शुभ कार्य में देर नहीं करना चाहिए, शीघ्रता में सारी तैयारी कराइए। वे कहते हैं कि जिस दिन श्रीरामचन्द्रजी युवराजपद ग्रहण करेंगे वही समय शुभ और मंगलमय होगा।

इस तरह इन तीनों खण्डों में राम का माहात्म्य और कथा सूत्र का विस्तार की चर्चा यहाँ की गयी है अति महत्वपूर्ण है।

कुमार रजनीकान्त रंजन
29-5-20